भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका

शोधपत्र-हिन्दी

* डॉ. डी.एस. ठाकुर

(1) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पूर्व अनुभूति एवं अनुभव का क्षण। (2) स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख क्रान्तिकारी व्यक्तित्व–परिवार, समाज एवं राष्ट्र का योगदान। (3) स्वतंत्रता संग्राम उच्च शिक्षा के कर्म में समन्वय स्थापित करता है। (4) स्वतंत्रता संग्राम एवं 1857 के समय की परिस्थितियां–सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक। (5) हिन्दी पत्रकारिता का योगदान। (6) 1857 के पश्चात्–व्यक्ति, भाग्य का निर्माता है, दृष्टिकोण अनवरत संघर्ष (7) हिन्दी पत्रकारिता का भूत एवं वर्तमान से समन्वय, अविस्मरणीय प्रभा एवं प्रतिभा। (8) उपलब्धि एवं मूल्यांकन।

त्याग, व्यक्तित्व एवं धर्म चेतना की पहचान है मानव से ही परिवार, समाज, राज्य एवं राष्ट्र अमूर्त होकर मूर्त बनता है और यही रह कर व्यक्ति अपनी पहचान बनाता है। इतिहास, दर्शन एवं वाड्.गमय का विगतागत महत्व रहा है। भावना केन्द्रित देश जहां पत्थरों की पूजा एवं गौ, गंगा से बढ़कर धर्म का कोई भी रूप नहीं, इस बात से पूर्व के आक्रान्ता चाहे वह मुसलमान हो अथवा ब्रिटिश सभी को अच्छी तरह से मालूम था कि भावना के वशीभूत भारतीयों को वर्षं में किया जा सकता है। वर्ण व्यवस्था एवं अस्पृश्यता की पहचान धर्म से नहीं, मानव से करते हैं, पूजा पूजक से बढ़कर है, लेकिन जीवन के कोई मेल नहीं, आते ही अंग्रेज जान चके थे। भारतीय दर्शन में इसलिए वे आपत्ति को धर्म, विपत्ति को कर्म एवं संपत्ति को (मर्म) द्वारा हासिल करना चाहते थे।

इकबाल ने ठीक ही लिखा है :––

''वतन की फिकर कर नॉदा,
मुसीबत आने वाली है,
तेरी बरबादियों के मश्विरे है आसमानो में'' (1)

(इकबाल और उनकी भायरी संपादक प्रकाश पंडित, पृष्ठ–14)

मैथिलीशरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना भी महत्व के है:

''हम कौन थे ? क्या हो गए है,
और होगे क्या अभी
आओं विचारे आज मिलकर यह
यह समस्याएं सभी'' (भारत भारती पृष्ठ 4)

स्वतंत्रता संग्राम इसलिए विशेष उपयोगी कि अध्येता ये जानते है कि मानव और मानवेत्तर का आपत्ति, विपत्ति और संपत्ति में अटूट रिश्ता है दोनों प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। मानवेत्तर में क्षणिक परिणाम स्वरूप आज भी धर्म ग्रंथों में उनकी जीत हुई है इसलिए विजित कह रहा हूं और मानव को प्रभावित किया लेकिन रागद्वेश के कारण वर्गो को विभाजित हो गया और अहित को श्रेष्ठ माना फिर भी आज आमिष और निरामिष प्रेमी मानव के लिए हंस, कोयल, कौआ, गरूड़, हाथी, भोर यहॉ तक गाय, बैल, वानर, श्रेश्ठ स्थान पाये, भूत ही नहीं अपितु वर्तमान समय इसका प्रमाण, दूसरा जड़ का है तो पीपल, आम, वट, तुलसी, आंवला, नीम, एक वर्ग के लिए पूज्य है और दूसरे के लिए जीवन निर्वाह का साधन। किन्तु कटु सत्य है मानव बुद्धि, ज्ञान एवं विवेक की जान एवं खान है।

यह भी सत्य है जड़ एवं मानवेत्तर ही जीवन का आधार स्वतंत्रता संग्राम पूर्व क्रांतिकारी–उपरोक्त बातों का अंग्रेजों पर बहुत प्रभाव पड़ा था जो जीवन में नहीं है, वही जीवन में है, और जो जीवन में है वह यहां के मानव में नहीं। ''एकता'' का यहां के परिवार, समाज एवं राष्ट्र से कोई नाता है। अपनापन व्यक्ति भी प्रेम एवं बैर को समझ सकता है। विदेशी अच्छी तरह जान गए और विपत्ति का बीज बो दिए, सोने की चिड़िया, दूध की नदियॉं की संपत्ति को पहली बार महसूस किया दूसरी बार अनुभव एवं तीसरी बार अच्छी जान गए इसलिए गॉंधी जी ने 1930 में गिरफ्तारी देते हुए कहॉं है कि ''हिन्दु किसी को अछूत न माने।'' (3) (कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ–315)

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में सब कुछ अर्पित एवं समर्पित करने वाले भारतेन्दु प्रथम थे उन्होंने भारतेन्दु मैगजीन का सम्पादन किया था। ''हिन्दुओं को अंग्रेजो के आने के पहले मुर्खो का प्रचण्ड भासन मिला था। (4)

* अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भा. ई. राघवेन्द्र राव विज्ञान, महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

(भारत दुर्द ा, पृष्ठ–51) लेकिन बाद में कर्मठ नेताओं ने समझा लार्ड कर्जन का मनो भाव भारतीयों के प्रति बड़ा ही ''अनुदार कृकृ भारतीय के चरित्र को असत्य पूर्ण मानता था।'' (5) (कांग्रेस का इतिहास, पृष्ठ भाग–1, पृष्ठ–64)

उच्च शिक्षा मानने का नहीं जानने का है। गौरव एवं गरिमा का बुद्धि एवं कौ ाल का समन्वय करने का है, लेकिन एक इतिहासकार ने लिखा –– ''बीसवी भाताब्दी के कुछ राज नेताओं ने बहादुर भााह और नाना साहब की परम्परा को भुला दिया। (6) (सत्यनारायण दुबे ''भारत का इतिहास एवं आधुनिक पा चात्य इतिहास की मुख्य ध ााराएँ, पृष्ठ–95)

इतना कहना होगा स्वतंत्रता संग्राम में 29 मार्च 1857 की बैरकपुर की घटनाएं एवं मंगल पाण्डेय का विद्रोह नि चत रूप से भारतीयों को सचेत करने एवं 10 मई 1857 मेरठ में क्रांति का श्री गणे ा कई पक्षों को सामने लाता है इतना ही नहीं बल्कि 18 जून 1858 रानी लक्ष्मी बाई का बल्कि भारतीय नारी की उज्ज्वल परम्परा जो कल्पना लोक में विचरण करती है, उसे साकार किया तथा 18 अप्रैल 1859 तात्या टोपे की भारतीय जन जागरण को झक झोर देता है। नाना साहब के संबंध में एक साहित्यकार ने लिखा है :–– ''समर्थ गुरू ने राजनीति को धर्म के माध यम से समुचित मार्ग पर चलाया था। (7) (छावा, प श्ठ 806 भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन अनुवाद, वेद कुमार वेदालंकार, प्रथम संस्करण 1984) चेतना के उन्मेश में आर्य समाज ने स्वतंत्रता संग्राम में व्यक्तिगत स्तर पर महत्व पूर्ण भूमिका अदा की,, (8) (''भारतीय संस्कृति कोष श्री लीलाध ार भार्मा प श्ठ 10), उनके 'सत्यार्थ प्रकाश' के संबंध में विनायक दामोदर साबरकर ने लिखा है, ''हिन्दु जाति की ठण्डी रंगों में उश्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रंथ अमर रहे यह मेरी कामना है, सत्यार्थ प्रकाश के विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की भोखी नहीं मार सकता'' (9) (सत्यार्थ प्रकाश, दयानंद सरस्वती अंतिम प श्ठ, बैक साइड 408, आर्य प्रकाशन अजमेरी गेट दिल्ली त तीय संस्करण) 1857 के पूर्व की घटनाएँ लोगों को कार्य कारण एवं विचार को समझने के लिए प्रेरित करता है इस क्षेत्र में 1761 ई. का पानीपत का तीसरा युद्ध कौतूहल पूर्ण रहा है।

राष्ट्र भी मर्यादा को रेखांकित करता है।

एक साहित्यकार ने लिखा.....

''नाना साहब....ज्ञाने वर की समाधि के दर्शन हुए पल भर श्री मन्त के आँखे मूंद ली कृकृ आँखे खोलकर देखा तो सामने कृकृघोड़े धूल उड़ाते तेजी से आ रहे थे कृकृकृ हर हर महादेव के सिंहनाद से सारा परिसर दनदना गया था, नंगी तलवारे चमक रही थी कृकृ चतुरंग सेना का आध ाार से ज्यादा हिस्सा फौरी तौर पर नदी पर कर वादे के पास आ पहुंचा। (10) (पानीपत–धवल आका ा प श्ठ 669, मराठी मूल विश्वास पाटील, अनुवाद मोरे वर तपस्वी, भारतीय ज्ञान पीठ, पर सा पिटर्स नवीन भााहदरा दिल्ली, पहला संस्करण 1991)

सच कहिए तो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भाालीन नायक की जो सब कुछ सहन करता है, निर्मल अंतः करण, दया, धर्म, परोपकार, कश्ट सहकर भी सुख देना, भूखे को भोजन, जिसकी पहचान हो, भारतीय आत्मिक मंथन करता है :–

एक इतिहासकार ने लिखा है – ''भारतीय सैनिको के साथ भेदभाव की नीति और उनके धार्मिक, विश्वासों पर आघात कृकृकृ हिन्दु देवी देवताओं के लिए अप ाब्दों का प्रयोग करते थे। इस्लाम के खिलाफ बकवास किया करते थे –––– मुसलमान को छल कपट से तथा भांति–भांति के प्रलोभन देकर इसाई बनाया जा रहा था।'' (11) (यूनिफाइड इतिहास, भारत का इतिहास एवं आधुनिक पा चात्य इतिहास की मूल धाराएं, सत्यनारायण दुबे, पुस्तक प्रकाशन, खजुरी बाजार, इन्दौर संस्करण 2008, प श्ठ 87–88) उन्होंने यह भी लिखा ''रानी लक्ष्मी बाई का बलिदान इतिहास में अमर रहेगा, युगों युगों तक देश को''–––– अनुप्रमाणित करता रहेगा, अंग्रेजों ने उसके अद्म्य साहस, अलौकिक भूरत्व तथा रण कोषल की प्र ंसा की है।'' (12) (वही, पृष्ठ–92)

अनेक पा चात्य विचारों का धर्म, दर्शन, साहित्य पर प्रभाव पड़ा, प्रेमचंद पर गोर्की का प्रभाव पड़ता है। ''माँ'' उपन्यास का नायक देश प्रेम के लिए एक क्षण भी गंवाना नहीं चाहता। ''पावेल ब्ला सोवको सदा के लिए साइबेरिया में निर्वासित किया जाने वाला है, उसकी माँ पेलागेया नि लोवना उस सूर केरन के साथ जिसमें मुकदमें के समय पावेल के भाशण छपे गैर कानूनी पर्चे भरते थे राजनीतिक पुलिस वालों के हत्थे चढ़ जाती है। वे उसका अपमान करते हैं, मारते हैं, पीटते है मगर वह इर्द–गिर्द जमा लोगों को जीवन की सच्चाई बताने का मौका हाथ से नहीं जाने देती है, वह चिल्लाकर अपने जल्लादों से कहती है, सच्चाई को खून की नदियों में भी नहीं डुबोया जा सकता –– बेवकूफो तुम जितना अत्याचार करोगें हमारी नफरत उतनी ही बढ़ेगी।'' (13) (माँ, पक्ति–4 गोनी परिशिष्ट 440इजरा भाग से पीपुल्स पब्लिकें ा हाउस लॉ लिमि. 53 रानी झांसी रोड नई दिल्ली)

प्रेमचंद की कई रचनाएं विशेष कर ''सोजेवतन'' इसके प्रमाण है। इसी तरह क्रमशः चिंतनों में व्यास के उस कथन को भी ''लोभी मनुष्य सदैव क्रोध और द्वेष में डूबे रहते है।'' (15) (वेदव्यास, महाभारत भाांति पर्व) ''अधर्मी होने केकारण जिह्वा सुख के कारण वासना अच्छी लगती अंग्रेजो के असंतोश अपने ऊपर अविश्वास का फल है।'' (16) (रमाशंकर गुप्त, सूक्ति सागर, पृष्ठ–40)

क्षत्राणी के दिव्य चेतना को ''चमक उठी सन् संतावन में वह तलवार पुरानी थी। बुंदेलो हर बोलों के मुँह हमनें सुनी कहानी थी।'' का सुभाषचन्द्र बोस पर इतना प्रभाव पड़ा, कि आजाद हिन्द फौज देश प्रेम के लिए मर मिटे नायक के संबंध में लिखा–''दुर्भाग्य के आघात और नेतृत्व में दोष के कारण प्रथम स्वातन्त्रय युद्ध में हमारे भाग्य का पराभवका कलंक आया, परंतु फिर भी हमारे में धीरोंदात्त नायक राष्ट्र की स्मृति में ध्रुव तारे की भांति अटल बने रहकर हमें बलिदान और पराक्रम का संदेश देते ही आ रहे है। (17) (महानायक 624 विश्वास पाटिल भारतीय ज्ञान पीठ नयी दिल्ली पहला संस्करण 1999) राष्ट्रीय जागरण के नेताओं ने माना कि– ''कुशासन के प्रति विद्रोह करना ईश्वर की आज्ञा मानना है।'' (18) (सुक्ति सागर रमाशंकर गुप्त)

उन्होंने (Revolution never go back words) को संग्राम के लिए चुना उन्होंने यह भी स्वीकार किया कबीर, सूर, तुलसी के भक्ति आंदोलन को जीवन में लक्षित किया। परिणाम स्वरूप अनेक शिक्षाविद् नारी जागरण को महत्व दिया, जैसे कर्वे महर्शि, कन्हैयालाल माणिक मुरा, कस्तूरी रंगा अप्यंगार, ने पत्रकारिता एवं देश भक्ति को विशेष महत्व दिया, इसी तरह काका साहेब खाडिलकर, काजीन जरूल इस्लाम बंगला भाषा के विद्रोही के रूप एवं किदवई रफी अहमद, गणेश भांकर विद्यार्थी। गोखले को गांधी राजनीति गुरू मानते थे 1857 की क्रान्ति से मातृभाशा के प्रेम का परिचय मिलता है, स्वामी विवेकानन्द कहते है कि –''इस विदेशी भाशा के माध्यम से पाए ज्ञान के कारण ही तो उनका राम इतना पराया हो गया था, वह राम जो बाल्यावस्था में आस्थावान वैष्णव था, अपनी विधा के कारण नास्तिक होता जा रहा है– वे स्वयं देख रहे है कि वह ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार कर रहा है, आस्तिकता का विद्रुप बना रहा है, किन्तु वे कुछ नहीं कर सकते।'' (19) (तोड़ो कारा तोड़ो, पृष्ठ–92, नरेन्द्र कोहली किताब घर प्रकाश नयी दिल्ली निर्माण प्रथम भाग) भारत के हर सजग नागरिक दायित्व को अनुभव कर रहे थे, कृष्ण बिहारी ने ठीक ही लिखा है ''प्रत्येक स्वदेशी राजनेता का अपना एक पत्र था, जिसकी भाक्ति से अंग्रेज सरकार आंतकित रहती थी और स्वाभाविक रूप से नाना प्रतिबंधो और अंकुशों द्वारा उनकी प्रभावी वाणी को कुंठित करने के हीन आचरण द्वारा अपनी दुर्नीति का अनचाहे प्रकाशन करती रहती थी।'' (20) (हिन्दी पत्रकारिता, कृष्ण बिहारी मिश्रा लोक भारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद) सादा जीवन उच्च शिक्षा को अपना कर सुयोग्य कर्म से नेता सुलझे हुए विचारक, अन्याय और अनीति से सतत् संघर्ष करने वाले वीर योद्धा विश्व भाांति और सत्य का मार्ग दिखाने लगे, (वही, पृष्ठ 28) आशा की किरण लोगों ने जाना, समझा। देवी सिंह ने ठीक ही लिखा है कि–''आजाद भारत को राष्ट्रीयता की जरूरत है, सामाजिक चेतना से सम्पन्न राष्ट्रीयता को उसके टूटकर बिखर जाने का खतरा है।'' (21) (नये भारत के शिल्पी देवी सिंह चौहान माथुर 9 से प्रगति प्रकाशन रायपुर म.प्र. 1986)

यथार्थ को उच्च शिक्षा, व्यक्ति के हर पहलु को समझने के लिए बौद्धिक क्षमता को बढ़ाने का जो वर्तमान के लिए बहुत जरूरी है नीरेन्द्र दास गुप्त (पंजाब) पंजशिराजा (केरल) पट्टाभि सीता रमैया'' कांग्रेस का इतिहास लिखा है कि इसी तरह नरसी मेहता, नरेन्द्र देव, नर्मद कवि (गुजराती) है व्यक्ति समाज को अपनी पहचान दी है, औरंगजेब की क्रूरता भारतीयों को सबक दे जाता है। दयारा एवं तेग बहादुर की याग जनता हमेशा याद रखेगी, दादा भाई नौरोजी एवं देवेन्द्रनाथ ठाकुर, परांजपे, शिवराम महादेव (स्वराज्यपत्र) ने उच्च शिक्षा के सृजन एवं अर्जन के लिए छात्रोपयोगी है गोपाल गणेश आगरण (महाराष्ट्र) नारी जागरण, समाज सेवा, गोविन्द वल्लभ पंत, बालक चन्द्र भोखर आजाद, लाला लाजपतराय, दक्षिण के तिलक के रूप चितम्बरम् पिल्लै, अद्वितीय वीरांगणना के रूप में रानी चेन्नम्मा (दक्षिण भारत) अद्भूत मिशाल कायम की है जो अंग्रेज कलेक्टर के सामने मर्दाना वेश में लड़ी। भूत की प्रासंगिकता वर्तमान को समझने में सहायक है प्रकाश नारायण, तेग बहादुर गुरू एवं तेज बहादुर सप्रू भाालीनता के रूप में जाने जाते है उच्च शिक्षा बिखरे हुए कड़ी को जोड़ने का है विगत के दर्शन को आगत में उपयोग का हैं। राष्ट्रीय जागरण में कवि वचन सुधा, माधुरी, हंस, जागरण, सरस्वती पत्रिका का विशेष योगदान रहा।'' राधाकृष्ण ने ठीक ही लिखा––''संघर्ष है, चेतन अभिप्राय एवं अचेतन मनोयोग के बीच भलाई बुराई का ज्ञान एवं गुढ़ता का मित्र है हमें स्वंय अपने से, दुर्बलता से, अपनी प्रकृति में निहित भ्रष्टता से अभी रक्षा करनीहै यह विश्व पतित मानव का घर है जहां विवेक का राज्य होना चाहिये किन्तु राज्य है,

वस्तुतः अविवेक का।'' (22) (भारतीय संस्कृति कुछ विचार (सर्वपल्ली डॉ. राधा कृष्णन्, पृष्ठ 12, राज्यपाल एण्ड संस सरस्वती बिहार दिल्ली)

आगे कहते है कि ''इतिहास नेतृत्व संयोग एवं परिस्थिति की अन्योन्य प्रतिक्रिया है किसी राष्ट्र की वृद्धि केलिए लोगों में अतीत में मिल जुलकर काम करने की बात का ज्ञान तथा भविश्य में साथ–साथ काम करने का संकल्प होना चाहिये।'' (23) (वही भारतीय संस्कृति कुछ विचार, पृष्ठ–91) निष्कर्ष रूप में कह सकते है ''आजादी की इतनी बड़ी लड़ाई किसी एक प्रदेश या तबके के बदौलत संभव नहीं थी। इसमें सिपाहियानी केन्द्रीय भूमिका ने अथवा मजदूर, किसान, जमींदार, सरकारी, महकमों में काम करने वाले लेखक, पत्रकार तथा दूसरे लोग भी शामिल थे। (24) (योजना मासिक पत्रिका–पत्रिका आजादी की पहली लड़ाई और अखबार, जनवरी विशेषांक 2008 पृष्ठ–47)

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सही अर्थ में दिव्य एवं भव्य का, जीवन मूल्य को निर्धारित करने का पैमाना है। प्रतीक केवल कहने सुनने का नहीं, अपितु गुनने (मनन) करने अर्थात् धर्म, कर्म एवं मर्म तीनों को एकाकार करने का है। भारतीय राष्ट्र ध्वज तीनों को लक्षित करता है जहां केसरिया श्रेश्ठ कर्म का प्रतिनिधित्व है, वही सफेद धर्म, मानवता, सत्य एवं शांति को इंगित करता है एवं हरे रंग का दर्शन है। प्रकृति एवं जीवन को समझने का साहित्य के प्रयास में समय विशेष में ''पुनर्जागरण को व्यापक सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के लिए नाटक ही सर्वाधिक उपयुक्त माध्यम था। यो गद्य के क्षेत्र में नाट्य माध्यम का पहला चुनाव करके भारतेन्दु ने अपनी सही ऐतिहासिक दृश्टिकोण का परिचय दिया।'' (25) (हिन्दी साहित्य और संवेदना राम स्वरूप चतुर्वेदी दसवा संस्कार भारतीय प्रकाशन, 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, 51)

सहित्य सेवी जन सेवक के रूप में भारतेन्दु की पहचान देखिएः–''इस महामंत्र का जाप करो जो हिन्दुस्तान में रहे, चाहे किसी रंग, किसी जाति का क्यों न हो वह हिन्दू है हिन्दू की सहायता करो, बंगाली, मराठा, पंजाबी, मद्रासी, वैदिक, जैन, ब्राम्हण, मुसलमान सब एक का हाथ एक पकड़ो।'' (26) हिन्दू व्याख्यान 1884 महावीर प्रसाद द्विवेदी, माखन लाल चतुर्वेदी (पुष्प की अभिलाशा), निराला (जागो फिर एक बार) आदि में सक्रिय भूमिका स्पष्ट है। भगत सिंह प्रताप (बलवंत) एवं दिल्ली के अर्जुन (अर्जुन सिंह) ने अमिट छाप दिए है। रामानंद चट्टोपाध्याय ''मार्डन रिव्यू'' और ''विशाल भारत'' सफल पत्रकार के रूप में देश सेवा किए है। समस्त चिंतको ने समाज, राजनीतिक, धार्मिक सभी क्षेत्र में योग देने वालों में महादेव गोविन्द रानाडे, आत्माराम पाण्डुरंग, रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर, रामकृष्ण परमहंस, दिव्य प्रज्ञा एवं प्रभा से धर्म एवं कर्म का समन्वय कर प्रत्याभिज्ञान किया। स्वदेशी चीजों का प्रबल पक्षधर श्री प्रफुल्लचंद राव के कथन को ''जब तक हम सब चीजों के लिए विदेशों पर आश्रित रहेगें देश आगे नहीं बढ़ सकता।'' (27) (भारतीय संस्कृति कोष–पृष्ठ –567) प्रागैतिहासिक क्यों न हो लेकिन वर्तमान में उनका बहुत महत्व है। पाणिनि, पंतजलि, याक, कालिदास में धर्म, दर्शन, राजनीति भी है। पुरूषोत्तम दास टंडन राजनीति (इलाहाबाद), पृथ्वीराज चौहान (राज पिथौरा) प्रताप सिंह राणा का भी महत्व है। अगली पीढ़ी को विचार एवं चिंतन के लिए प्रेरित करता है। फिरोजशाह मेहता का ''कथन'' है कि ''मैं अंग्रेजों को ईश्वर की देन मानता हूँ।'' (28) (भारतीय संस्कृति, पृष्ठ–58)

क्योंकि ईश्वर सभी को समान बनाया है, फिर ऊंच नीच क्यों? सार्थकता के तौर पर समझना होगा :––

''मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना,
हिन्दी है हम वतन है, हिन्दोस्ता हमारा।'' (29)
(स.प्रो. युसुफ सलीम चिश्ती बांग ए दरा, पृष्ठ–202

तो दूसरी ओर सरदार पटेल के कथन ''कांटे उन्हीं को लगते है जो जीवन में फूलों को पाना चाहते है, गिरते वही है जो चलते है, दौड़ते है, मर्द बनकर हिम्मत से मुसीबतों का मुकाबला करना चाहिये। (30) (नये भारत के शिल्पी, पृष्ठ–211) उपलब्धि एवं मूल्यांकन–पूर्व और पश्चात् दोनो का महत्व है क्योंकि कोई पूर्व के महत्व को नहीं समझ पाता, कोई पश्चात के महत्व को, वर्तमान में दोनों का महत्व है एक विद्वान ने ठीक लिखा–''संयमी व्यक्ति वासनाओं के वर्ष में नही होता वरन् वासनाओं को अपने वर्ष में कर लेता है। व्यास, वाल्मीकि के लिए प्रकृति, गौतम, महावीर के लिए परिवेश, कालिदास, माघ, भारवि, भवभूति, भर्तहरि, दर्शन भांकराचार्य, वल्लभाचार्य, रामानुजाचार्य, पाणिनी यास्क, पंतजलि, कबीर, जायसी, नानक, तुलसी, सूर, स्वयभू, नामदेव मानवता को समझा है। जल, जनसंख्या, भूमि, संस्कृति आने वाली पीढ़ी को धरोहर के लिए संपदा तैयार करना। अकबर इलाहाबादी, अब्दुल रहीम, मूलकदास, अरविन्द महर्षि, इकबाल, काका कालेलकर, गालिब मिर्जा, गिरधर, रामदास संपर्क चाणक्य, ज्ञाने वर, गोपीनाथ, गोपालदास, नीरज, तिलक, गांधी, नेहरू, सुभाष, भगत, गणेश भांकर, अपने लाल बाल पाल भी देश एवं राष्ट्र की सजग प्रहरी एवं धरोहर है। हिन्दी पत्रकारिता में सामाजिक चिंतको एवं राजनीतिक चिंतको का विशेष योगदान रहा।

तिरू वेल्लुकर (तमिल वेद), राजा राम, केशवन चंद,

दयानंद, समाज को स्थापित किया। भारतेन्द्र, महावीर, प्रेमचंद, मैथिलीशरण, माखनलाल, निराला, आचार्य रामचन्द्र, प्रसाद, पंत अभिव्यक्ति दी है। वर्तमान पीढ़ी जो गांव से लेकर शहर तक फेले है, उपरोक्त महापुरूषों के संबंध में निष्कर्षतः कह सकते है विचार विवेक की जननी है परिवार एवं समाज राष्ट्र की धुरी है। मानव को मानवता तक पहुंचानेका माध्यम सेवा है, श्रेष्ठ कार्य विश्व मानव की मानवता को केन्द्रित करने का साधन। माँ साधन एवं साध्य दोनों की नींव मजबूत करने की तुरीय (चकार) की भूमिका है। धर्म एवं संस्कृति को शिशु क्रियान्वित करता है परिवार एवं समाज——व्यक्ति का सजग रूप है। चैतन्य भाव, त्याग, कर्मठ व्यक्तित्व उभरने लगता है।

यहाँ हम उसे साहसी, निर्भिक का नाम देते एवं दिए है। व्यक्ति के लिए समाज एवं राष्ट्र के लिए बात बात में, अपने तेजस्वी विचार से रूढ़ि, परम्परा, बाह्याडम्बर का विरोध धर्म के हित में करता है। इसके कई पहलू है समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, संस्कृति किसी एक पक्ष को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करता है यही व्यक्ति संज्ञा से विशेषण रूप में पहचाने जाने लगता है। प्रारंभिक धर्म ग्रंथों में क्रांति का रूप मुखरित है चाहे वह रामायण हो या महाभारत, वेद, कुरान, बाइबिल सभी में मनीशियों ने अधर्म, राजनीति के विरूद्ध क्रांति को प्रतिश्ठित है, ग्रंथो के उत्कृष्ट कथन से व्यक्ति सामाजिक, राजनीति, सांस्कृतिक, चेतना दिखाता है। समाज में हम रहते है, लेकिन दायित्व बोध गलत और सही का निर्णय वही कर सकता है। जो संघर्ष करता है व्यक्ति से, समाज से ऐसे व्यक्ति को जुझना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति ही समाज में ''धर्म एवं कर्म'' को स्थापित करता है, उच्च विचार, उच्च शिक्षा के लिए अत्यन्त उपयोगी है शिक्षा एक दिन का नहीं, वरन् अनवरत् संघर्ष का परिणाम है इसके लिए विवेकी व्यक्ति अवरत् प्रयास में लगे रहता है सैद्धांतिक ज्ञान के व्यवहारिक पहलू को सामने साकार करता है, इसके लिए तन एवं मन की सच्चाई को न केवल भावना अपितु भाव (मूल्य) को प्रस्तुत करता है।

रामायण एवं महाभारत में क्रांति का स्वर कई रूपों में अनीति विरोध में प्रकट है प्रतीाकात्मक रूप में रावण, दुर्योधन, कंस, बालि, हरिण्यकश्यप इसने प्रतिनिधित्व करते है तो दूसरी ओर राम, कृष्ण नीति का समर्थन करते है लेकिन आगे चलकर उपरोक्त धर्म ग्रंथ की विविधता में व्यकित, समाज, राष्ट्र, विश्व में परिलक्षित है। व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता है। कर्म ही प्रधान है आगे चलकर प्रत्यक्ष देखने को मिलता है। भारत के इतिहास दर्शन में श्रष्ठ राजाओं की लम्बी परम्परा रही है। लेकिन सभी मापदण्ड में खरे नहीं उतरे। आदि और वर्तमान इनके उदाहरण है जहा सात्विक आचरण देश एवं जनता की रक्षा की, वही विलासिता के कारण गुलामी को स्वीकार किया। इतिहास में कई प्रमाण मिलते है उच्च शिक्षा में बच्चों को विशेष अवसर मिलता है इसीलिए 1857 की क्रांति एवं स्वतंत्रता संग्राम हिन्दी पत्रकारिता का उज्जवल पक्ष है। साहित्यिक चेतना का उन्मेश यहा से पाते है।

उपरोक्त सभी घटनाओं के केन्द्र में जनता है अनीति क्षणिक विजयी हो सकता है, संतोश का अभाव, लालसा को उद्वेलित करता है। परिणाम ईसा पूर्व एवं पश्चात् 18वीं शताब्दी पर धर्म, दर्शन, नीति को व्यक्ति समाज के अनुरूप जानने वाले अनेक व्यक्ति हुए, आज विद्यार्थियों को इससे जोड़ना है ब्रम्ह निर्गुण एवं सगुण दोनों रूप में स्थापित है। लेकिन साध्य के अभाव में साधन घातक है यही कारण है कि विदेशी दुस्साहस किए। लेकिन अधिक समयतक कुटनीति में कामयाब नहीं हुए भारत के हर नागरिक आन बान एवं भाान से देश की मर्यादा को समझने लगे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम हम भारतीयों को समझने के लिए प्रेरित करता है। भले ही देश में संर्कीणता एवं वर्ण व्यवस्था का प्रभाव कायम हो। लेकिन लोगों में आपसी प्रेम भी कम नहीं था। एक दुसरे की मर्यादा को लोग प्रेम से परिभाशित करते थे। ऐसे स्वनाम धन्य पूर्व में बताए जा चुके है। ने राष्ट्र की गरिमा एवं महिमा को स्थापित किए है उनके क्रांतिकारी विचार को आज भी हिन्दुस्तानी गर्व से उच्चारण करते है एवं करते रहेगें।

जिन नेताओं विचारकों, चिंतकों, साहित्यकारों के उज्जवल पक्ष सामने आये, वे स्वयं जीवन में लागू किए, जो कहते थे, वही करते थे, वही जीते थे।

''गीता रहस्य'' को तिलक ने सार्थक किया था। आज भी अनुकरणीय है एवं अविस्मरणीय ''मेरी आत्म कथा'' की सार्थकता गांधी जी सच्चाई एवं कर्म की भाुद्धता, माखनलाल की—कृष्णार्जन युद्ध, साहित्य देवता, ''चाह नहीं मैं सुरबाला'' केवल कागजी नहीं वस्तुतः जीवन जी चुके हैं। साहित्य जीवन को समझने एवं जाननेका अचूक माध यम है। नेहरू की ''भारत एक खोज'' जिसमें उन बातों को सामने लाया है जिससे हम परिचित नहीं है परिचित होना चाहते हैं। प्रेमचन्द की पहचान 'देश प्रेम एवं साहित्य सेवा एवं सच्चे पत्रकार के रूप में पाते है। सेवा सदन, कर्मभूमि, रंग भूमि, निर्मला सभी में भारत की झांकी है।

अन्त में उच्च शिक्षा के प्रासंगिक तौर पर यही कहना चाहता हूं कि धर्म को मानवता वादी दृष्टिकोण से अपनाना

है, वर्तमान में योग्य संवाहक का अभाव एवं भोग लिप्सा की बलवती इच्छा है धर्म समाज एवं कर्म के लिए घातक है।

तिलक का एकनिश्ठ भाव जनता एवं समाज के लिए इसलिए उपयोगी हुए उनके राष्ट्र सेवा एवं अध्यात्मक, जनता के केन्द्र में है ''गणेश'' की पूजा, केवल दिखाने तक सीमित नहीं, बल्कि उनकी इस पूजा में साधना पाते है जिसमें माँ के पीछे धरती का रहस्य छुपा है इसका समाविश्ठ गीता रहस्य में पाते हैं।

वर्तमान में केवल अनुसरण दिखावा का है जिसमें केवल आसक्ति का बाह्याडम्बर है। ''गीता''को समझने वाला ही गणेश को प्रतिश्ठित कर सकता है। वर्तमान के लिए तात्विक एवं सात्विक विचार जरूरी है। गांधी तन से हष्ट–पुष्ट नहीं दिखता लेकिन उच्च शिक्षा का मन इतना ऊंचा की विश्व में वंदनीय एवं रवीन्द्रनाथ जैसे महान साहित्य सेवक को महात्मा कहने के लिए विवश कर दिया?

रामकृष्ण के उच्च विचार केवल पूजा तक सीमित नहीं कोई भी व्यक्ति यदि साधना करता है तो उसके लिए समाधि जरूरी है उसके साध्य की परीक्षा त्याग ही विजित रख सकता है। आगे चलकर यही महाकाली की चिंतन एवं साधना भूमि में नरेन्द्र (विवेकानन्द) जैसे बालक प्रवे ा करता है और पूरे भारत की पहचान न केवल राष्ट्रीय क्रांति में नहीं अपितु नई ऊर्जा नई चेतना नई किरण को विश्व में फेलाता है। निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि उच्च शिक्षा के लिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका तन, मन एवं धन की समर्पण की, मानव मूल्य की स्थापना की रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

क्रमांक	लेखक	पुस्तक का नाम
1	प्रकाश पण्डित	इकबाल और उनकी भाायरी
2	मैथिली ारण गुप्त	भारत भारती
3	पट्टाभि सीता रमैया	कांग्रेस का इतिहास
4	सत्यनारायण दुबे	भारत का इतिहास एवं पाश्चात्य इतिहास की आधुनिक मूल धाराएं
5	वेद कुमार वेदालंकार	छाया (भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन)
6	श्री लीलाधर भार्मा	भारतीय संस्कृति कोष
7	दयानंद सरस्वती	सत्यार्थ प्रकाश, आर्य प्रकाशन अजमेरी रोड गेट दिल्ली
8	विश्वास पाटील	पानीपत भारतीय ज्ञानपीठ नवीन भााहदरा दिल्ली
9	मैक्सिम गोर्की	''माँ'' परिशिष्ट, पीपुल्स पब्लिकेशन हाउस प्रा.लि. 53 रानी झांसी रोड, दिल्ली
10	वेद व्यास	महाभारत शांति पर्व
11	विश्वास पाटील	महानायक भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली पहला संस्करण 1999
12	नरेन्द्र कोहली	तोड़ो कारा तोड़ो, किताब घर, प्रकाश नयी दिल्ली विभाग प्रथम भाग
13	कृष्ण बिहारी मिश्रा	हिन्दी पत्रकारिता, भारतीय प्रकाशन 15 ए महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद
14.	देवी सिंह चौहान	नये भारत के शिल्पी, प्रगति प्रकाशन रायपुर
15	प्रो0 युसुँ सलीम	चिश्ती बांगए दंश
16	डॉ.जी.एन.सिंह	पाश्चात्य दर्शन–स्अुडेन्टस फैण्डज एण्ड कंपनी वाराणसी–5